योगसूत्र में कर्म की अवधारणा

डॉ. राम किशोर

सहायक आचार्य (योग)

स्कूल ऑफ हेल्थ साइंसेज,

छत्रपति शाहू जी महाराज, विश्वविद्यालय, कानपुर

योगसूत्र में कर्म के भेद

कर्माशुक्लाकृष्णं योगिनस्त्रिविधिमितरेषाम्।

योगसूत्र 4.7।

कर्म अशुक्ल अकृष्णं योगिनः त्रिविधिः इतरेषाम्।

- योगियों के कर्म अशुक्ल और अकृष्ण होते हैं।
- अन्यो के कर्म कम तीन भेद हैं– 1. शुक्लकर्म 2. अकृष्ण कर्म 3. शुक्ल कृष्ण मिश्रित कर्म

ततस्ताद्विपाकानुगुणानामेवाभिव्यक्तिर्वासनानाम्

योगसूत्र 4.8 ।

तत् तद् विपाकानुगुणाम् एव अभिव्यक्तिः वासनानाम्

उन तीन प्रकार के कर्मों से उनके फल भोगों के अनुसार ही वासनाओं की अभिव्यक्ति होती है।

पूर्व जन्मों की वासनाएं संस्कार के रूप में अन्तःकरण में एकत्र रहती है, जिनके दो भेद हैं–

1. स्मृति मात्र फलवाली
2. जाति, आयु तथा भोगरूप फलवाली।

कर्मों के अनुसार ही ये वासनाएं प्रकट होती है। जिस प्रकार के कर्मफल से मनुष्य जन्म ग्रहण करता है, उसी प्रकार की स्मृति वासनाएं दूसरी उन वासनाओं को जागृत कर देती हैं, जो संस्कार के रूप में अनेक जन्मों से अन्तःकरण में संगृहीत हैं और जाति, आयु, फल, भोग वाली हैं। शेष वासनाएं चित्त भूमि में प्रसुप्त होकर दबी रहती हैं।

धन्यवाद

Thanks